एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 11 (नवम्बर, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

ब्लैक बंगाल बकरी — एक उत्कृष्ट देशी नस्ल

दीपशिखा कुमारी, सुमित चौहान एवं *एम.एस. महेश
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय, राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, काशी हिंदू विश्वविद्यालय,
मिर्जापुर–231307, उत्तर-प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mahesh.ms@bhu.ac.in



भारत में खेती के बाद किसानों द्वारा सबसे ज्यादा पशुपालन ही किया जाता है, जिसमें गाय, भैंस, मुर्गी और बकरी मुख्य भूमिका में सम्मिलित है। बकरी मानव की सबसे प्राचीन सहचर पालतू पशुओं में से एक है। मानव सभ्यता के शुरुआती व्यवसायों में "बकरी पालन" का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसका प्रारंभ लगभग 10,000–11,000 वर्ष पहले माना जाता है। वर्तमान में, भारत लगभग 1500 लाख बकरियों की जनसंख्या के साथ विश्व में अग्रणी स्थान रखता है। बकरी पालन भारत के प्रमुख किसानों एवं ग़रीबों के लिए सबसे विश्वसनीय आजीविका का साधन है। सबसे लोकप्रिय और छोटी जुगाली करने वाला यह पशु प्रजाति दूध, मांस और चमड़े जैसे बहुउद्देशीय उत्पाद प्रदान कर स्वरोज़गार सुनिश्चित करता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नस्लों की बकरियाँ पाई जाती हैं जैसे जमुनापारी, बीटल, सिरोही, बारबरी, ब्लैक बंगाल, उस्मानाबादी, आदि। इन्हीं नस्लों में एक विशेष नस्ल है "ब्लैक बंगाल", जिसे पूर्वी भारत का बहुमूल्य पशु संपत्ति माना जाता है। ब्लैक बंगाल बकरी भारतीय किसानों के लिए अत्यंत मूल्यवान मानी जाती है। इसका कारण इसकी जैविक विशेषताएं हैं — जैसे उच्च प्रजनन क्षमता (बहु मेमनो का उत्पादन), रोग प्रतिरोधकता, शीघ्र यौन परिपक्वता, अतः कम आयु में प्रजनन योग्य हो जाना, विविध जलवायु परिस्थितियों में सहज अनुकूलन की क्षमता, उत्तम मांस एवं चमड़े की गुणवत्ता, जो इसे आय वृद्धि का महत्वपूर्ण साधन बनाती है। इसी दिशा में यह लेख ब्लैक बंगाल बकरी की विशिष्टता, उचित पालन-प्रबंधन की विधि एवं ग्रामीण कृषकों के जीवन में इसके महत्व का एक विवरण प्रस्तुत करता है।

ब्लैक बंगाल बकरी की प्रमुख विशेषताएँ

मूल क्षेत्र/उत्पत्ति: ब्लैक बंगाल नस्ल मुख्यतः भारत के पश्चिम बंगाल में पाई जाती हैं, जिसमें हुगली और हावड़ा क्षेत्रों में इसके शुद्ध नस्ल विशेष रूप से उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त बिहार, झारखंड, उड़ीसा तथा असम में भी इनका प्रसार है। यह नस्ल ऐसे स्थानीय जलवायु में आसानी से ढल जाती है जहाँ वर्ष के अधिकांश समय नमी अधिक रहती है।

शारीरिक संरचना: ब्लैक बंगाल बकरी आकार में छोटी लेकिन शारीरिक बनावट में सुगठित होती है। इसका रंग गहरा काला एवं चमकदार होता है, किन्तु कुछ बकरियां भूरे एवं अन्य मिश्रित रंगों में भी पाई जाती हैं। इसके कान छोटे, सीधे, या हल्के झुके हुए होते हैं तथा सींग मध्यम आकार के (<15 से.मि.), पीछे की ओर झुके हुए होते हैं। इसके चेहरे की रूपरेखा सीधी होती है और सफ़ेद या भूरे रंग की धारियाँ पाई जाती है। आँखें सक्रिय, सतर्क और पैर छोटे एवं मजबूत होते है। इस नस्ल का जन्म भार 0.8-1.8 किग्रा के बीच (औसत: 1.3 किग्रा) होता है। शरीर का वजन जन्म से लेकर ढाई वर्ष की आयु तक क्रमिक रूप से बढ़ता है और वयस्क अवस्था में लगभग 20-30 किग्रा (नर: 25-30 किग्रा; मादा: 20-25 किग्रा) तक पहुँच जाता है।

उत्पादन

• **मांस उत्पादन:** बकरी का मांस 'चेवोन' कहलाता है। सभी नस्ल की बकरियों के मांस की तुलना में उच्च गुणवत्ता वाला मांस ब्लैक बंगाल बकरी से उपलब्ध होता है। न सिर्फ़ कम चर्बी बल्कि अत्यधिक पौष्टिक एवं स्वादिष्ट यह मांस प्रोटीन, विटामिन बी12, बी6, तथा आयरन से युक्त होता है। अन्य नस्लों की तुलना में ब्लैक बंगाल बकरी का ड्रेसिंग प्रतिशत (मांस प्राप्ति) अधिक (55–60%) होता है। ब्लैक बंगाल बकरी का मांस प्राप्ति 55-60% होता है। मांसपेशियां मज़बूत होने के कारण, इस मांस का स्वाद अनूठा होता है। वध के बाद, इसकी खाल भी बहुत अच्छी गुणवत्ता की होती है, जिसका उपयोग जूते, बैग, जैकेट, इत्यादि बनाने में होता है।

• **दूध उत्पादन:** ब्लैक बंगाल बकरी का पालन मुख्यतः मांस के लिए किया जाता है। इसका दूध उत्पादन अपेक्षाकृत कम होता है (औसत: 210 मिलीलीटर प्रतिदिन), जबकि दुग्धावस्था के 11वें दिन लगभग 310 मिलीलीटर होता है। जिन बकरियों में तीन बच्चे होते हैं, उनमें दुग्ध उत्पादन लगभग 290 मिलीलीटर प्रतिदिन पाया गया है।



ब्लैक बंगाल बकरियों के विभिन्न रंग (बीएचयू बकरी फार्म, मिर्ज़ापुर, उत्तर प्रदेश)

प्रजनन क्षमता

ब्लैक बंगाल बकरी नस्ल एक बार में अधिक मेमनों को जन्म देने की क्षमता रखती है। इनमें जुड़वा मेमने सामान्य हैं और दूसरे प्रसव के बाद तीन मेमनों को भी जन्म देती है। इसमें दो बियानों के बीच का अंतराल 177–234 दिन (औसत: 206 दिन, यानी <7 माह) होता है, जिससे दो वर्षों में तीन सफल बियान संभव है। यह अन्य अधिकांश नस्लों की तुलना में कम उम्र (10-12 माह) में हीं बियाने योग्य हो जाती हैं तथा इसका गर्भकाल 141–147 दिनों का होता है। पारंपरिक रूप से इस नस्ल में प्राकृतिक गर्भाधान प्रचलित हैं, परंतु मांस उत्पादन बढ़ाने हेतु अच्छी गुणवत्ता वाली बकरियों के साथ लगवाने पर बल दिया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में फार्म को व्यवस्थित करने के लिए नर बकरी का शीघ्र बधियाकरण करते है, जिससे अनचाहे प्रजनन का रोकथाम, शांत बकरे तथा प्रबंधन में सुविधा मिलती है। इससे मांस में दुर्गंध भी कम होती है। सामान्य ग्रामीण कृषि फार्मों में अज्ञात वंशावली वाले नर के उपयोग से प्रजनन क्षमता कम हो जाती है, जिससे फार्म का उत्पादन घट जाता है। इसके निवारण हेतु कृत्रिम गर्भाधान करवाना आवश्यक है। सटीक हीट की पहचान प्रजनन कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण भाग है।

पालन एवं प्रबंधन

ब्लैक बंगाल बकरी के प्रबंधन की पद्धति/प्रणाली को 3 विधियों में विभाजित किया गया है।

(1) व्यापक प्रणाली: इसमें बकरियों को दिनभर (10-12 घंटे) खुले में चरने के लिए छोड़ दिया जाता है। बकरियां जंगल या खेतों में खुद हीं खाना ढूंढती हैं, जिसमें मुख्य रूप से महिलाओं और बच्चों सहित पारिवारिक श्रम का उपयोग किया जाता है। इस प्रणाली में खर्च कम होने के साथ साथ श्रम भी कम लगता है, परंतु इसमें बीमारियों तथा जंगली जानवर का खतरा एवं उत्पादन कम होता है। यह गांव, पहाड़ी और गरीब क्षेत्रों में प्रचलित है।



एक ब्लैक बंगाल बकरी अपने जुड़वा बच्चों के साथ — ध्यान दें: इसका रंग भूरा है, और चेहरे पर सफ़ेद धारियां हैं (बीएचयू बकरी फार्म, मिर्ज़ापुर, उत्तर प्रदेश)



बीएचयू के बकरी फार्म में तीन बच्चों के साथ एक ब्लैक बंगाल बकरी

(2) अर्ध-गहन प्रणाली: यह प्रणाली उन परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है जहां चराई भूमि सीमित है लेकिन फसल अवशेष और अन्य औद्योगिक उप-उत्पाद पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इसमें बकरियों को कुछ समय चरने के लिए छोड़ा जाता है, बाकी समय बाड़े में रखकर दाना-चारा दिया जाता है। बीमारी का खतरा कम होने के कारण यह कृषकों में सबसे अधिक प्रचलित प्रणाली है।

(3) अत्यंत गहन प्रणाली: इसमें बकरियों को हमेशा बाड़े में ही रखकर हरा चारा तथा दाना दिया जाता है। इसमें खर्च एवं श्रम ज़्यादा लगता है जबकि प्रजनन प्रबंधन आसान होता है। उच्च पूंजी निवेश के कारण, यह प्रणाली व्यवसायिक फार्म में प्रचलित है।



अत्यंत गहन प्रणाली के अंतर्गत पाली जा रही ब्लैक बंगाल बकरियां (वयस्क एवं मेमने)

आहार प्रबंधन

ब्लैक बंगाल बकरियां सामान्यतः प्राकृतिक चरागाहों में उगने वाले विभिन्न वनस्पतियों से अपनी पोषण आवश्यकता पूरी करती हैं। चराई सुबह-दोपहर तक या सुबह-शाम अलग अलग समय पर की जाती है। यह बकरी झाड़ियां, पेड़ के पत्ते (विशेषकर बबूल, नीम, बेर आदि), सूखे पत्ते, तथा घास आदि खाती हैं। इसके अलावा दलहनी, तिलहन, खली, अनाज, गेहूं, चावल आदि का भी उपयोग किया जाता है। बड़े बकरी फार्म पर स्टॉल-फीडिंग यानी बाड़े में चारा देना प्रचलित है। इसमें पशुओं को साफ-सुथरे वातावरण में चारा और पानी नियंत्रित मात्रा में दिया जाता है तथा बीमारियों से सुरक्षा भी मिलती है।



बीएचयू के बकरी फार्म में ब्लैक बंगाल बकरियों का झुंड ताज़े बेर के पत्तों का आनंद लेते हुए

आवास प्रबंधन

एक स्वस्थ बकरी फार्म में बंद एवं खुले क्षेत्र दोनों होने चाहिए। बाड़े में पर्याप्त वायु, प्रकाश, तथा पूर्व-पश्चिम दिशा में एवं फर्श मिट्टी का होना चाहिए। प्रत्येक वयस्क बकरी को 10 वर्ग फीट निर्मित स्थान की आवश्यकता होती है। बाड़े में प्रतिदिन सफ़ाई होना चाहिए जिससे बकरी मूत्र की अमोनिया जैसे गंध से मुक्त रहती है। बाड़े के चारों ओर पेड़ होने चाहिए जिससे वातावरण ठंडा रहे और तार की जाली लगी होनी चाहिए।

रोग व्यापकता एवं जीवनकाल

इस नस्ल की बकरी में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है और यह सामान्यतः गंभीर रोगों से कम प्रभावित होती है। यह बकरी किसी भी वातावरण में जल्दी से ढल जाती है। इनका औसत जीवनकाल 8–10 वर्ष होता है तथा मृत्यु दर 5–10% के बीच पाई जाती है। इन बकरियों में मृत्यु का मुख्य कारण पी.पी.आर. (बकरी प्लेग), निमोनिया, आंतरिक परजीवी संक्रमण इत्यादि पाया जाता हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

भारत में ब्लैक बंगाल बकरी सबसे लोकप्रिय और आर्थिक रूप से लाभदायक बकरी की नस्ल है, कारण है इसका सरल प्रबंधन। इसका आर्थिक महत्व न सिर्फ़ पौष्टिक एवं बेहतरीन मांस से बल्कि इसके कम आयु (5-6 माह) में गर्भधारण होने से साबित होता है। अन्य विभिन्न नस्लों की तुलना में यह सर्वश्रेष्ठ चमड़ा प्रदान करती है, जिससे "मोरोक्को लेदर" तैयार किया जाता है। इसका चमड़ा अत्यधिक चमकदार एवं मुलायम होता है, जिसका एक प्रसिद्ध उदाहरण है "ग्लेस –किड"। इसका उपयोग उत्तम गुणवत्ता के उत्पाद जैसे जूते, पर्स, बेल्ट, इत्यादि बनाने में किया जाता है जिसकी अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में भारी मांग होती है।

सारांश

खेती के साथ-साथ, ब्लैक बंगाल बकरी जैसा पशुधन रखना भूमिहीन तथा लघु किसानों के लिए अत्यंत लाभदायक पाया गया है। जिस तरह वर्तमान स्थिति में कृषि योग्य भूमि कम होती जा रही है, ऐसे में एक किसान ब्लैक बंगाल बकरी का पालन कम लागत एवं कम निवेश करते हुए अधिक लाभ उठा सकता है। सही देखभाल, उचित टीकाकरण और साफ़-सफ़ाई से किसान अपनी आय कई गुना बढ़ा सकता है। वैज्ञानिक तरीके से इसका पालन करने से यह गरीबी उन्मूलन का सबसे प्रभावी ज़रिया बन सकता है। अंततः ब्लैक बंगाल बकरी न केवल एक पशु है, बल्कि ग़रीब किसानों के लिए "चलती-फिरती बैंक" के समान है, क्योंकि इसे बेचकर तुरंत धन प्राप्त किया जा सकता है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण ब्लैक बंगाल नस्ल रोज़गार का एक सशक्त साधन साबित होती है, अतः इसे पूर्वी भारत के ग्रामीण अर्थव्यवस्था का रीढ़ माना जाता है।